International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 3; Issue 2; February 2017; Page No. 111-113

शन्ति के लिए सयुक्त राष्ट्र संघ का प्रयास कोरिया युध्द के संदर्भ मे

डा. सी. के. भगत
राजनीति विज्ञान विभाग, बिरसा कॉलेज खूँटी, राँची विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड, भारत

सारांश
अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का चरम उद्देश्य शांति का संरक्षण रहा है। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के उपरांत विश्व में शांति एवं सुव्यवस्था स्थापित करने के उद्देश्य से सन् 1919 के पेरिस शांति सम्मेलन में वर्साय संधि के प्रमुखतम अंग के रूप में राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई। अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के इतिहास की यह एक महान तथा युगान्तकारी घटना थी क्योंकि इसके साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति जीवन में एक नवीन व्यवस्था का सूत्रपात हुआ। इससे पूर्व कभी भी विश्व के राज्यों ने मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय शांति की स्थापना के लिए ऐसे विश्वव्यापी तथा शक्तिशाली संगठन का निर्माण नहीं किया था। परन्तु इसकी स्थापना के बीस वर्ष बाद विश्व को द्वितीय विश्व युद्ध का सामना करना पड़ा। युद्ध के प्रारंभ होते ही पुनः शांति की स्थापना के लिये प्रयास शुरू हो गया। जिसके फलस्वरूप 26 जुन 1945 को सानफ्रांसिस्कों में पचास देशों के प्रतिनिधियों ने संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर पर हस्ताक्षर कर संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना की। इस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों को युद्ध के अभिशाप से मुक्ति दिलाना तय किया गया। परन्तु अपने स्थापना के कुछ वर्षो के बाद ही उत्तरी कोरिया और दक्षिणी कोरिया के बीच विवाद प्रारंभ हो गया। जिससे दोनों ही ओर से विश्व के दो महाशक्तियाँ सोवियत संघ और अमेरिका का समर्थन प्राप्त था। जिससे यह विवाद गहराता गया और अन्त में उत्तरी कोरिया द्वारा दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण के साथ ही युद्ध प्रारंभ हो गया। लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आक्रमण रोकने और शांति के प्रयास के फलस्वरूप यह युद्ध विकराल युद्ध का रूप धारण नहीं कर सकी और तीन वर्षो के बाद युद्ध विराम दोनों देशों के बीच हो जाने पर यह युद्ध समाप्त हो गया।

मूल शब्दः सयुक्त राष्ट्र संघ, उद्देश्य शांति, 1919 के पेरिस शांति

प्रस्तावना
मनुष्य का इतिहास एक अन्तहीन लड़ाई है स्थाई शांति और सुरक्षा के लिए। मनुष्य युद्ध के तौर तरीके से जकड़ा हुआ है। ये नियम समय के साथ–साथ तरह–तरह से गुजरते हैं। हर एक युद्ध एक तरह से संगठनो का समझौता शांति के लिए है जो खुद में नई युद्ध के बीच बोए रहता हैं। युरोप के प्रसंविदा से लेकर राष्ट्रों के संगठन तक मनुष्य ने शांति का ढ़ाँचा तैयार किया है किन्तु ये ढ़ाँचे युद्ध की बीज को मिटा पाने में असमर्थ रहें जो प्रथम विश्व युद्ध का कारण हुई जो दावाग्नि के समान फैलती गई।

शांति का ढ़ाँचा राष्ट्र संघ की प्रसंविदा के अनुसार वह संगठन था जिसकी खोज इस विचार से किया गया था कि सम्पूर्ण विश्व में शांति हो। जिसका अनुसंधान अमेरिका के राष्ट्रपति कुडरो विल्सन के द्वारा किया गया था और इसके विद्यान को शांति का विद्यान और शांति की निश्चित गारंटी माना। लेकिन ये सभी आशाएँ आदर्श मात्र बनकर रह गया। जैसे–जैसे समय बीतता गया और परीक्षा की घड़ी आयी राष्ट्र संघ एक शक्तिहीन संस्था साबित हुई। जिसका परिणाम यह हुआ कि विश्व एक बार फिर सन् 1939 में महायुद्ध के जाल में फँस गया।

इस प्रकार शांति स्थापना के लिए राष्ट्र संघ के रूप में मानव का प्रथम प्रयास असफल हो गया परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की उपयोगिता में अनस्था नहीं उत्पन्न हुई। महायुद्ध प्रारंभ होते ही अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के माध्यम से शांति और सुरक्षा की स्थापना की खोज प्रारंभ हो गई।

जिस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध ने राष्ट्र संघ की स्थापना की प्रेरणा दी थी ठीक उसी प्रकार द्वित्तीय महायुद्ध ने नये संगठन की स्थापना की प्रेरणा दी। जिसके फलस्वरूप 26 जून 1945 का सानफ्रांसिस्कों में 50 देशों के प्रतिनिधियों ने संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर पर हस्ताक्षर किये और इस प्रकार संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का बुनियादी प्रयोजन शान्तिमय अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विकास में मदद देना है। लेकिन इस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन जिसका निर्माण शांति की स्थापना और युद्ध को रोकने के लिए की गई थी। जिसके निर्माण के कुछ वर्षो के बाद ही कोरिया का युद्ध प्रारंभ हो गया।

विवाद
25 जून 1950 को कोरियाई युद्ध का प्रारंभ उत्तरी कोरिया द्वारा दक्षिणी कोरिया पर किये गये आक्रमण के साथ हुआ। यह संघर्ष शीत युद्ध काल में लड़ा जाने वाला सबसे पहला और बड़ा युद्ध था। इस युद्ध में लड़ा जाने वाला सबसे पहला और बड़ा युद्ध था। इस युद्ध में एक पक्ष का समर्थन कम्युनिष्ट सोवियत संघ और साम्यवादी चीन उत्तर कोरिया के पक्ष से तो दूसरी तरफ संयुक्त राज्य अमेरिका दक्षिणी कोरिया के पक्ष में कर रहे थे।

कोरिया विवाद सम्भवतः संयुक्त राष्ट्र संघ के शान्ति कायम रखने की प्रक्रिया और अस्तित्व का परीक्षण था। जिसे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्वान शूमा में ''सामूहिक सुरक्षा परीक्षण'' की संज्ञा दी।

शोध प्रविधि
प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक प्रकृति की है। शोध ओलेख के लिए प्राथमिक एवं द्वितीय दोनों प्रकार के स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। इसके लिए मुख्यतः प्रकाशित ग्रंथ, पत्र–पत्रिकाओं में छपे विवरण, निबंध एवं लेख तथा विभिन्न शोध ग्रंथो को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

युद्ध के पूर्व की स्थिति
कोरिया विवाद शीत युद्ध की ही परिणति थी। सन् 1904–1905 में रूष जापान के युद्ध के बाद जापान द्वारा कब्जा किए जाने के पहले प्रायद्वीप पर कोरियाई साम्रज्य का शासन था। कोरिया युद्ध के बाद से लेकर 1945 तक जापान के कब्जे में रहा। द्वितीय विश्व युद्ध में रूष द्वारा जापान के विरूद्ध छेड़ दिया गया वही जापान के विरूद्ध अमेरिका भी युद्धरत था। 1945 में विश्व युद्ध के समाप्ति पर रूष और अमेरिका के बीच आपस में एक संधि हो

गई जिसके फलस्वरूप कोरिया के दो भागों में विभाजित कर दोनों देश संयुक्त रूप से प्रशसित करने लगे। जिसमें उत्तर कोरिया का प्रशासन सोवियत रूष और दक्षिणी कोरिया का प्रशासन अमेरिका द्वारा की जाने लगी।

कोरियाई नेताओं से इन देशों ने वादा किया था कि पाँच साल के बाद वे देश को उनके हवाले कर देंगे। लेकिन कोरिया की जनता इस व्यवस्था के खिलाफ हो गई। नतीजा यह हुआ कि जल्दी ही कोरिया में विरोध प्रदर्शन होने लगा।

ऐसी परिस्थितियों में जापानी शासन से मुक्ति के बाद वर्ष 1947 में अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र संघ के जरिए कोरिया को एक राष्ट्र बनाने की पहल की। इसके तहत संयुक्त राष्ट्र के आयोग की निगरानी में चुनाव कराने का फैसला लिया गया और मई 1948 में कोरिया प्रायद्वीप के दक्षिण हिस्से में चुनाव हुआ। इस चुनाव के बाद 15 अगस्त को रिपब्लिक ऑफ कोरिया बनाने की घोषणा की गई।

उत्तरी कोरिया ने संयुक्त राष्ट्र संघ की पर्यवेक्षण में सन् 1948 में दक्षिण में हुए चुनाव में भाग लेने से इंकार कर दिया और सोवियत संघ के नियंत्रण वाले उत्तरी हिस्से में सुप्रीम की पीपुल्स असेंबली का चुनाव हुआ जिसके बाद सितम्बर 1948 में डेमोक्रेटिक रिपब्लिक पीपुल्स ऑफ कोरिया बनाने की घोषणा की गई।

इस प्रकार 1948 के चुनाव द्वारा दक्षिणी हिस्से में अमेरिकी समर्थक सरकार का गठन हुआ और उत्तरी क्षेत्र में रूष औरा चीन समर्थक वाली सरकार का गठन हुआ। उसी समय यह भी तय हो गया कि ये दो हिस्से उत्तरी और दक्षिणी कोरिया के पीछे रूष चीन और अमेरिका का समर्थन होने के कारण ये दोनों हिस्से एक दूसरे के खिलाफ भविष्य में मोर्चा खोलेंगे।

समस्या

कोरियाई राज्य का उत्तरी और दक्षिणी कोरिया में विभाजन और दोनों देशों में दो विरोधी विचारधारा का प्रभाव होने के कारण, स्थापना होने के बाद ही उत्तरी कोरिया ने शीघ्र ही दक्षिणी कोरिया को धमकी देते हुए दक्षिणी कोरियाई सरकार को गैर कानूनी करार किया और पुरे कोरिया पर अपना सम्प्रभुता का दावा ठोक दिया।

आगे चलकर उत्तरी कोरिया ने 25 जून 1950 को दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण कर दिया और कुछ ही दिनों के भीतर दक्षिणी कोरिया का एक बड़ा हिस्सा को उत्तरी कोरिया ने अपने कब्जे में ले लिया।

इस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध क बाद इस तरह का यह आक्रमण भी एक बड़ा आक्रमण था जिसके फलस्वरूप दोनों देशों के बीच युद्ध प्रारंभ हो गया। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर एक बार फिर शांति की स्थापना और युद्ध की समाप्ति को लेकर प्रयास शुरू हो गई।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा शांति का प्रयास

युद्ध प्रारंभ होने के पश्चात् दक्षिणी कोरिया हार के कागार पर पहुँच गया। यह एक गंभीर समस्या का रूप धारण करने लगी। विश्व के सामने यह युद्ध शांति की स्थापना को लेकर प्रश्न चिह्न भी लगा रही थी। सोवियत संघ ठीक उसी समय सुरक्षा परिषद् के बैठको का बाहिष्कार कर रहा था। इस बात का फायदा उठाते हुए अमेरिका ने अन्य सदस्य राज्यों से मिलकर सुरक्षा परिषद् से उत्तरी कोरिया को आक्रमणकारी राज्य घोषित करवा दिया। साथ ही साथ सुरक्षा परिषद् ने यह सिफारिश की कि संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य राज्य दक्षिणी कोरिया गणराज्य को आवश्यक सहायता प्रदान करे जिससे वह सशस्त्र आक्रमण का मुकाबला कर सके तथा उस क्षेत्र में शांति और सुरक्षा स्थापित की जा सके।

सुरक्षा परिषद् को इस प्रस्ताव द्वारा अमेरिका को संयुक्त राष्ट्र संघ के झंडे तले सहयोगी देशों की सेना के साथ दक्षिण कोरिया की मदद करने का अधिकार मिला। और पहली बार 7 जुलाई 1950 को अमरीकी जनरल मैकार्थर की कामन में संयुक्त राष्ट्र संघ के झंडे के नीचे संयुक्त कमान का निर्माण किया गया। साथ ही इससे पहले कि पूरा दक्षिण कोरिया किम इल सुंग के कब्जे में आता वहाँ अमेरिका के नेतृत्व में दस लाख सैनिक पहुँच गए।

सितम्बर 1950 तक अमरीकी नेतृत्व में संयुक्त राष्ट्र की सेना ने दक्षिण कोरिया का एक बड़ा हिस्सा अपने कब्जे में ले लिया था। साल में कम्युनिस्ट समर्थको के दमन के बाद उत्तर कोरिया के तत्कालीन नेता किम उल–सुंग ने दक्षिणी कोरिया के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। इधर संयुक्त राष्ट्र संघ की कामन वाली सेना उत्तर कोरिया में चीन की सीमा के नजदीक बढ़ रही थी। चीन की कम्युनिष्ट सरकार के लिए ये परिस्थितियाँ स्वीकार नहीं थी।

शांति के लिए एकता का प्रस्ताव

कोरिया युद्ध के दौरान सुरक्षा परिषद् के निषेधाधिकार से उत्पन्न गतिरोध को दूर करने तथा सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने का महासभा का सार्वाधिक महत्वपूर्ण और सफल प्रयास 3 नवम्बर 1950 का शांति के लिए एकता प्रस्ताव था।

युद्ध की ऐसी परिस्थिति में सोवियत रूप ने बहिष्कार की नीति को त्यागने का निर्णय किया। उसने यह घोषणा की कि वह सुरक्षा परिषद् के सत्रों में भाग लेने के लिए वापस आ रहा है। सोवियत रूष द्वारा की गई इस घोषणा से पश्चिमी राष्ट्रों के बीच खलबली मच गई। उन्हें यह आशंका उत्पन्न हो गयी कि रूष अपने निषेधाधिकार के प्रयोग द्वारा उत्तरी कोरिया से संयुक्त राष्ट्र के सशस्त्र कार्यवाई को प्रभावित करने का प्रयास करेगा। सोवियत रूष द्वारा की जाने वाली अंडगेबाजी को आंशका के विरूद्ध सुरक्षा के रूप में अमेरिका और अन्य सात राष्ट्रों ने 9 अक्टूबर 1950 को शांति के लिए एकता की 'अकेसन योजना' प्रस्तुत की जिसे महासभा ने 3 नवम्बर 1950 को स्वीकार कर लिया। यही प्रस्ताव शांति के लिए एकता प्रस्ताव के नाम से जाना जाता है। इस प्रस्ताव को अमरिकी सदस्य डीन अकेसन के नेतृत्व में प्रस्तुत किया गया था इसलिए इसे अकेसन योजना के नाम से जाना जाता है।

युद्ध के दौरान नवम्बर में अचानक चीन ने अमेरिका के खिलाफ मोर्चा खोल दिया और पहली बार इस युद्ध में अमेरिकी सेना को पीछे हटना पड़ा। फलस्वरूप अमेरिकी एवं चीनी सेनाएँ कोरिया मामले को लेकर उलझ पड़ी। युद्ध शुरू होने के कुछ महिनों के बाद चीन को यह आशंका सताने लगी कि अमेरिकी फौज उसकी सरहदों के तरफ रूख कर सकती है। इसलिए उसने यह तय किया कि इस लड़ाई में वे अपने साथी उत्तरी कोरिया का बचाव करेगा। इस तरह से चीनी सैनिकों के मोर्चा खोलने के बाद अमेरिकी सैनिकों को ज्यादा नुकसान उठाना पड़ा। अमेरिकी हताहत होने वाले सैनिकों की संख्या भी बढ़ गई। यद्यपि की चीनी सैनिकों के पास उम्दा हथियार नहीं थे लेकिन उनकी तादाद बहुत बड़ी थी।

चीनी सेना द्वारा उत्तरी कोरिया के समर्थन में दक्षिण कोरिया के विरोध में आक्रमण में भाग लेने और अमेरिकी सैनिकों के हताहत होने पर जनरल डगलस मैक आर्थर ने धरती को जला देने वाली अपनी युद्ध नीति पर अमल करने का फैसला किया। उसने उत्तरी कोरिया के शहरों और गांवों के ऊपर से रोजाना अमेरिकी बम वर्षक विमान ठ–29 और ठ–52 मंडराने लगे। इन लड़ाकू विमानों पर जानलेवा नापलम लोड था। नापलम एक तरह का ज्वलनशील तरल पदार्थ होता है जिसका इस्तेमाल युद्ध में किया जाता है। इससे जनरल डगलस मैक आर्थर की बहुत बदनामी भी हुई लेकिन ये हमले रूके नहीं। अमेरिकी कार्यवाही के बाद

जल्द ही उत्तरी कोरिया के शहर और गांव मलबों में बदलने लगे।

अब इस क्षेत्र में लड़ाई लम्बी खिचने के आसार बन गये थे। चीन, उत्तरी कोरिया और अमेरिका उसके सहयोगी देशों की सेनाएँ अपने मोर्चा पर जमी हुई थी, हाँलाकि युद्ध के कुछ समय के बाद ही दोनो पक्षों को यह समझ में आ गया था कि इस युद्ध का कोई नतीजा नहीं निकलना है।

परन्तु युद्ध के बीच अमेरिका ने चीन को परमाणु बम हमले का भी धमकी दे डाली लेकिन चीन ने उसके आगे झुकने से इनकार कर दिया। इससे युद्ध की समस्या गम्भीर हो गया। यह मामला तुरंत सुरक्षा परिषद् में लाया गया। सुरक्षा परिषद् में यह प्रस्ताव रखा गया कि चीन की सरकार उत्तरी कोरिया को मदद देना बंद कर दें। परन्तु सोवियत वीटो के कारण यह प्रस्ताव रद्द हो गया। महासभा ने चीन और उत्तरी कोरिया को युद्ध सामग्री भेजने पर प्रतिबंध लगा दिया गया परन्तु इसका कोई फल नहीं निकला।

कोरिया का युद्ध और आगे चलता लेकिन मार्च 1953 में स्तालिन की मौत ने हालात बदल दिये। रूष की नई सरकार अब इस मसले को और लम्बा नहीं खींचना चाहती थी। साथ ही साथ चीन ने भी अपना रूख में नरमी दिखाई। युद्ध की भीषणता से दोनों पक्ष अब तक तंग आ गये थे। फलतः युद्ध विराम की बाते चलने लगी। 10 जुलाई 1951 को यह वार्त्ता शुरू हुई और लगभग डेढ़ वर्ष तक यह बातचीत चलती रही। 8 जुलाई को दोनों पक्षों में एक समझौता हो गया। जिसमें पाँच टतस्थ राष्ट्रों का एक आयोग बना जिसके जिम्मे युद्ध बंदियों की अदला–बदली का कार्य सौंपा गया और 27 जुलाई को युद्ध विराम पर दस्तखत हो गए।

तीन वर्षों तक चलने वाला यह युद्ध इस प्रकार से बिना किसी निर्णय के समाप्त हो गया।

निष्कर्ष

कोरिया का युद्ध संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना और सामुहिक सुरक्षा की व्यवस्था के उद्देश्य का एक बहुत ही महत्वपूर्ण परीक्षण था। संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का महत्वपूर्ण उद्देश्य विश्व में शान्ति की स्थापना करना और युद्ध के उत्पन्न होने से रोकने और अगर युद्ध हो गई तो उसे विकराल रूप धारण करने से रोकने का प्रयास करना है। साथ ही विश्व को युद्ध की विभीषिका से बचाना है क्योंकि मानव समाज ने प्रथम विश्व युद्ध का सामना किया और उसके समाप्त होने के कुछ ही वर्षों के बाद द्वितीय विश्व युद्ध का सामना करना पड़ा। जो कि मानव सभ्यता के लिये बहुत ही दुखदायी रहा लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ ने कोरिया के युद्ध में अपने स्थापना के उद्देश्य को प्राप्त कर लिया। यह युद्ध उत्तरी कोरिया द्वारा दक्षिणी कोरिया में आक्रमण के साथ प्रारम्भ हुई। कुछ ही दिनों में दक्षिणी कोरिया के पक्ष में संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में संयुक्त राष्ट्र संघ की सेना द्वारा दक्षिणी कोरिया के पक्ष से उत्तरी कोरिया के ऊपर कार्रवाई शुरू कर दी गई। दूसरी तरफ चीन ने भी रूष का समर्थन करते हुए उत्तरी कोरिया के पक्ष में युद्ध में शामिल हो गया और यह युद्ध दो शक्तिशाली राज्य अमेरिका–रूष के प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया। जिससे इस युद्ध का स्वरूप बदलने की भी आशंका बढ़ गई। आगे चलकर विश्व के अनेक देशों के प्रयास और संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रभावी भूमिका के कारण, युद्धरत देशों के बीच युद्ध विराम की घोषणा पर 27 जुलाई 1953 को हुई और युद्ध विराम पर दस्तखत के साथ युद्ध समाप्त हो गया। इस तरह कोरिया युद्ध में संयुक्त राष्ट्र संघ की शान्ति स्थापना और युद्ध समाप्त करने का उद्देश्य भी सफल हुआ।

संदर्भ सूचि

1. मॉर्गेन्थो–पॉलिटिक्स एमंग नेशन्स
2. एल0 एम0 गुडरिच–द युनाइटेड नेशन सिक्यूरिटी कौंसिल, पृ0–226
3. ऑफिसियल रिर्कोडस ऑफ द जनरल एसेम्बली
4. आर0 एच0 शरण एवं टी0 एन0 पंत–अन्तर्राष्ट्रीय संगठन 1977
5. यू0 एन0 इयर बुक 1960
6. न्यूयार्क टाईम्स, अगस्त 1948
7. सोवियत न्यूज, 1948